उपरोक्त कविता की पंक्तियों का अर्थ यों तो सीधा सा ही है कि पुरातन पुरुष आज उदय होने वाले युग का सुनहरा इतिहास लिख रहा है। परंतु, इस अर्थ के रहस्य भेद में सारी सृष्टि के आदि मध्य और अंत का इतिहास छिपा है। बड़ें-बड़ें ऋषि-मुनि, तपस्वी, वैरागी, धर्मवेत्ता इस सृष्टि के रहस्य को नहीं जान पाये फिर साधारण मनुष्य की तो सामर्थ्य ही क्या है? सृष्टि की आदि कब और कैसे होती है, मध्य में क्या अवस्था होती है तथा अंत किस प्रकार होता है? पुरातन पुरुष कौन है? वे किस प्रकार उदय होने वाले युग का इतिहास लिखते हैं? उदीयमान स्वर्णिम युग कौन-सा है? ये सब ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर निराकार परमात्मा शिव के अतिरिक्त और कोई भी मनुष्यात्मा नहीं दे सकती। परमात्मा ही ज्ञान के सागर तथा त्रिकालदर्शी हैं। वे विश्व पिता, निर्देशक तथा रचयिता हैं। अत: वे ही जब इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं तभी इन प्रश्नों का सही उत्तर मनुष्यात्माओं को मिल सकता है।

पुरातन पुरुष अर्थात् ब्रह्मा के विषय में जो शाब्दिक ज्ञान प्रचलित है वह अपूर्ण और अधूरा है। वैसे सभी धर्म वाले ब्रह्मा को विभिन्न नामों से जानते और मानते हैं। उन्हें आदम, एडम, आदिनाथ, आदिपुरुष आदि-आदि नामों से पुकारा जाता है। यह भी माना जाता है कि ब्रह्मा के द्वारा ही सृष्टि की स्थापना होती है और इससे सम्बंधित अनेकानेक दंत कथाएं प्रचलित हैं। मत के अनुसार आदम और बीबी स्वर्ग से उतरते हैं, उनसे संतानें पैदा होती हैं जो कालांतर में करोड़ों और अरबों की संख्या में हो जाती है। दूसरे मत के अनुसार ब्रह्मा-मुख से अनेकों बच्चे पैदा हो जाते हैं और उन्हीं से फिर जनसंख्या बढ़ती है। यहां पर विचारणीय बात यह है कि जब आत्मा अजर, अमर, अविनाशी एवं अनश्वर है तो वह पैदा कैसे हो सकती है? पुनश्च, पैदा शरीर होते हैं, मृत्यु भी शरीरों की होती है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर धारण कर लेती है। शरीर धारण करने का नाम जन्म और त्याग करने का नाम मृत्यु है। शरीर का निर्माण माता एवं पिता के सहयोग से पांच तत्वों के द्वारा होता है। किन्तु आत्मा

लिख रहा पुरुष पुरातन आज, उदय युग का स्वर्णिम इतिहास!

किन्हीं स्थूल तत्वों से नहीं बनती जिसका निर्माण अथवा विनाश किया जा सके। यदि यह कहा जाय कि आत्माओं का निवास स्थान निराकारी दुनिया है और वह वहां से अपने-अपने समय पर विश्व रंगमंच पर पार्ट बजाने आती है, तब संसार में आत्माओं की वृद्धि होते रहना स्पष्ट हो जाता है। दूसरी बात, संसार में कभी महाप्रलय की स्थिति नहीं होती। यद्यपि युग परिवर्तन के लिए विनाश अवश्यम्भावी है जिसके फलस्वरूप अनेक आत्मायें मुक्ति प्राप्त कर वापस परमधाम चली जाती है तथा थोड़ी श्रेष्ठ संस्कारों वाली आत्मायें इस सृष्टि पर रहती है। पुनश्च, यह मत भी तर्कयुक्त नहीं लगती कि ब्रह्मा मुख के द्वारा साकार तनधारी मनुष्य पैदा हो जायें। इन बातों को यदि ज्यों का त्यों ले लिया जाए तो कोई भी बात बुद्धि में नहीं बैठती। हाँ, इनका सूक्ष्म तथा रूपकात्मक अर्थ अवश्य है किन्तु वह भी परमात्मा ही आकर बताते हैं।

पुरातन पुरुष द्वारा इतिहास की पुनरावृत्ति - यह सत्य है कि ब्रह्मा सृष्टि का आदिपिता है। निराकार रूप में सभी आत्मायें परमात्मा की संतान हैं किन्तु साकार लोक में ब्रह्मा सर्व आत्माओं का अलौकिक पिता है। अलौकिक इसलिए कहा जाता है कि उनके 'ब्रह्मा' द्वारा लौकिक रीति से संतानें पैदा होती अपितु कलियुग के अंत में ब्रह्मा मुखोकमल उच्चारित महावाक्यों को अपनाकर जो उनके बनते हैं वही उनकी मुख-सृष्टि कहलाती है। इन्हीं आत्माओं को 'ब्राह्मण' अथवा 'द्विज' भी कहते हैं। ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रतधारी और ब्रह्मा जैसे आचरण वाले। इन आत्माओं में ज्ञान द्वारा पुराने आसुरी संस्कार समाप्त होकर पुन: नये दैवी संस्कारों का प्रादुर्भाव होता है। यद्यपि इनका तन वही रहता है परंतु जीवन अर्थात् जीने का ढंग बदल जाता है। इसलिए इन्हें 'द्विज' भी कहते हैं। इस प्रकार इन ब्राह्मण अथवा द्विजों की उत्पत्ति जन्म पर आधारित न रहकर कर्म पर रहती है। यह ब्रह्मा की प्रजा अथवा रचना कहलाती है। ब्रह्मा को प्रजापिता भी कहते हैं। साकार प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रचना कराने का श्रेय यद्यपि परमात्मा निराकार त्रिमूर्ति शिव को ही है फिर भी यह सत्य है कि वह ब्रह्मा की हस्ती के बिना यह कार्य नहीं कर सकते। सदामुक्त शिव

(शेष भाग पृष्ठ 4 पर)

वर्तमान की हर सीन में कल्याण है

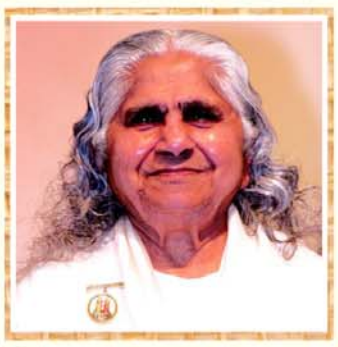

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा ने जो पांच स्वरूपों की ड्रिल बताई, पहले कहा बीजरूप स्थिति में रहो, अभी कहा सेकेण्ड में साइलेंस। एक काम पूरा ही नहीं किया तो दूसरा काम मिल गया, बाबा हमको छोड़ता नहीं है। आखिर अपने गले की माला बना ही देता है। भले हम हूँ, हाँ करे। जैसे नाटक में पहले रिहर्सल करते हैं वैसे यह 5 स्वरूपों के ड्रिल की बहुत अच्छी तरह से रिहर्सल करके उसमें एकदम एक्यूरेट परफेक्ट पार्ट बजायें तो सब वाह वाह करें। बीजरूप स्थिति यानि सब बातों को समेट लो, समा लो। विस्तार में जाने से टेंशन होता है इसलिए विस्तार में न जा करके सेकेण्ड में साइलेंस हो जाने से जो कुछ हुआ जैसे सागर में समा गया, यह है साइलेंस यानि बीजरूप स्थिति। तो बाबा ने कहा बीजरूप स्थिति से देवता बनते हो, फिर पूज्यनीय बन जाते हो। फिर अच्छी तरह से शांति में बैठ अपने सभी स्वरूपों की याद में रहना है। पर क्षत्रिय जो होगा वो कभी भी शांत नहीं बैठेगा। अन्तर्मुखी ही ब्राह्मण बन सकता है। शांत में बाबा के महावाक्य बड़े अच्छे लगते हैं और कुछ सुनाई नहीं पड़ता है और बाबा की दृष्टि पड़ने से और कुछ दिखाई भी नहीं पड़ता है।

ब्राह्मण हूँ तो मित्रता भाव से कल्याण की भावना रहती है? ड्रामा की हर सीन में कल्याण है, यह दिल से स्वीकार किया है? अपने से पूछो। भले कैसी भी सीन सामने आई है वो जायेगी, सब नम्बरवार होंगे तो बाबा ही शांत कर देता है। कईयों ने किसी को दोषी बनाके अपनी उम्र गंवाई है, वो ब्राह्मण नहीं है। तो कोई भी बात को पकड़के नहीं बैठें या कोई बात हमें पकड़ करके न बैठे, इसके लिए सेकण्ड में साइलेंस में जाओ तो इन सब बातों से छूट जायेंगे। बाबा ने ड्रामा का ज्ञान इतना अच्छा दिया है जो क्यों, क्या, कैसे इस गिटबिट से छुड़ा दिया है। जो क्यों, क्या, कैसे कहता है उसकी बात समझ में नहीं आती है। जो क्यों, क्या, कैसे से फ्री है तो उसके लिए सब कल्याणकारी है। बाबा ने कहा ड्रामा कल्याणकारी है, बाप कल्याणकारी है और बच्चे विश्व-कल्याणकारी हैं। तो साइलेंस में जाना माना अन्तर्मुखी होना। जरा भी बाहरमुखी होगा तो कभी अपनी कमी को देखेगा नहीं, बाहरमुखी दूसरे की कमी को देखने में इतना होशियार होता है कि 10-15 साल पहले की कमी भी याद करके बतायेगा। बाबा कहता है अभी किसी की कमी को न देखो, न मुख से बोलो क्योंकि नहीं तो वो तुम्हारी कमी हो जायेगी। बाहरमुखता जीवनबंध में ले आती है, अन्तर्मुखता जीवनमुक्त बना देती है। जिसमें पुराने सब हिसाब-किताब भी ठीक हैं, शरीर भी ठीक है, सब ठीक है क्योंकि अन्तर्मुखता जीवनमुक्त बना देती है। जिसमें पुराने सब हिसाब-किताब भी ठीक हैं, शरीर भी ठीक है, सब ठीक है क्योंकि अन्तर्मुखता से अन्दर जो माल छिपा हुआ रखा है वो दिखाई पड़ता है। बाहरमुखता से बाहर का जो किचड़ा है वो अंदर चला जाता है, जो अच्छा माल है वो दिखाई नहीं पड़ता है। तो मन की आँख खोलनी है, अन्तर्मुखी बनना है।

बाबा जो समझाता है उन्हीं बातों के विचारों में डीप जायें, इसके सिवाए और कोई बातों के डीप में न जायें। न ही पूछताछ करें क्योंकि जरूरत नहीं, हरेक अपना पार्ट अच्छा प्ले करे, जिसको हीरो बनना हो वो सेकेण्ड में जीरो लगा देवे। जीरो बाप का बच्चा हूँ, जीरो मेरा साथी है तो बस और क्या चाहिए! तो मुझे हीरो पार्टधारी बनना है तो हीरे मिसल बनना है। सच्चा सोना और बेदाग हीरा बनना है। इसमें चूँ, चाँ नहीं करना है क्योंकि हीरो पार्टधारी का अटेंशन होता है, डायरेक्टर देख रहा है मेरे को ... तो श्रीमत सिरमाथे पर हो।●

संगमयुग है भाग्य बनाने का युग

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

हमारी भी ऐसी ही स्थिति हो गई है, क्रोध भी कर रहे हैं, याद भी आ रहा है, बार-बार दिल को लग रहा है कि यह ठीक नहीं कर रहे हैं, फिर भी कर लेते हैं फिर पश्चाताप भी बहुत होता है। मजे की बात तो यह है कि एक बार पश्चाताप किया कि क्रोध करना बहुत खराब है, यह आग है। इसमें खुद भी जलते हैं, दूसरे भी जलते हैं, अनुभव कर लेते हैं और उसके बाद फौरन पश्चाताप हो जाता है लेकिन जब फिर कोई ऐसी परिस्थिति आती है तो फिर कर लेते हैं। फिर पूछो क्यों किया? जब एक बार पश्चाताप कर लिया फिर क्यों किया? तो कहते हैं आपको क्या पता, वह बात ही बहुत बड़ी थी! अब देखो बात बड़ी या भगवान का बच्चा बड़ा? बात तो मनुष्यों द्वारा ही हुई ना, हमने की या दूसरे ने की लेकिन बात भी बनाई तो हम लोगों ने ही है और भगवान के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान कहें कि बात बड़ी हो गई ना। तो क्या आपको बड़ी बात को छोटा करना नहीं आता है? दुनिया के हिसाब से, कमजोरी के हिसाब से आपको वह बात बहुत बड़ी लगती है। यह तो होता ही है वैसे जब कोई शरीर से कमजोर हो, उसको कहो कि मटका उठाओ तो बिचारा मटका तो क्या एक लोटा भी नहीं उठा सकेगा। कहेगा बहुत भारी है। बहादुर को कहेंगे लोटा उठाओ तो कहेगा मेरे को तो गागार दे दो। तो कमजोरी के कारण वह बात बड़ी लगती है। है तो बड़ी नहीं ना। तो बाबा इसकी युक्ति बताते हैं - जब भी आपको बात बड़ी लगे तो आप ऊपर, ऊंचे चले जाओ। ऊंचे कहां? ऊंचे ते ऊंचा हमारा घर परमधाम है, बाबा का भी घर वही है, तो वहां चले जाओ। तो बात क्या लगेगी? जैसे प्लेन में बैठके या ऊंचे स्थान से नीचे की चीजें देखो तो नीचे की बड़ी चीज भी छोटी सी लगती है। तो ऊंचे चले जाओ तो बात छोटी लगेगी लेकिन जब नीचे ठहरके देखते हो तो छोटी सी चीज भी बड़ी लगती है। तो बाबा कहते हैं कि क्या तुमको बुद्धि द्वारा ऊंचा जाना नहीं आता है? हम योग में क्या सीखते हैं? योग माना अपने मन, बुद्धि को ऊपर बाबा के पास ले जाना। चाहे सूक्ष्मवतन में जाओ, चाहे मूलवतन में। सूक्ष्मवतन भी इस साकारी दुनिया से ऊंचा है। लेकिन किसी को सूक्ष्मवतन या मूलवतन में जाना नहीं आता है तो कम से कम संगमयुग पर जो ऊंचा भाग्य मिला है, वह तो याद आ सकता है। हमारा कितना ऊंचा भाग्य है, वह बाबा सुनाता रहता है। रोज ऊंचे ते ऊंचे भाग्य का वर्णन मुरली में सुनते हैं। चलो और कुछ नहीं आये - मन बुद्धि को दूर ले जाना नहीं आता है, शरीर में फंसे रहते हैं, मानो बॉडी कॉन्सेस है लेकिन बुद्धि से यह तो सोच सकते हैं कि भगवान जो भाग्यविधाता है वह मेरा बाबा है। ब्राह्मण हूँ, ब्रह्माकुमार हूँ तो किसका बच्चा हूँ! ब्रह्मा बाबा को भाग्यविधाता कहा जाता है, शिवबाबा तो भाग्य विधाता है ही लेकिन ब्रह्मा बाबा का गायन है कि भाग्यविधाता ब्रह्मा है क्योंकि शिवबाबा भाग्य बांटता तो ब्रह्मा द्वारा ही है, इसीलिए ब्रह्मा को भाग्यविधाता कहा जाता है। तो कम से कम इस नशे में तो ऊपर चले जाओ कि भगवान मेरा बाप है। दुनिया वाले बिचारे सोचते हैं भगवान तो ऊंचे ते ऊंचा है, हजारों सूर्यों से तेजोमय है, उसे तो देख ही नहीं सकते हैं और हम कहते हैं हमारा तो बाप है। ब्रह्माकुमार कुमारी माना भाग्यविधाता का बच्चा। तो सिर्फ अपने भाग्य को ही याद करो कि मैं कौन हूँ? ●